International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com p
Volume 2; Issue 5; September 2017; Page No. 917-919

संत नितानंद की वाणी के विभिन्न आयाम

डॉ॰ राजेन्द्र सिंह
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, जनता महाविद्यालय, चरखी दादरी, हरियाणा, भारत।

प्रस्तावना

भारतभूमि प्रारम्भ से ही ऋषियों–मनीषियों चिन्तकों–साधकों और संतों की पूज्य स्थली रही है। इन साधक संतों ने युग–परिवेश की दशा को पहचान कर उसमें व्याप्त विकारों को दूर करने का सार्थक प्रयास तो किया ही है, साथ ही भारतीय–संस्कृति के उदात्त आयामों की अक्षुणता के स्तर को बनाये और बचाये रखने के अपने दायित्व का बूखबी निवर्हन भी किया है। केवल यही नहीं इस भौतिक जगत् में व्याप्त मोह–माया और लोभ–लालच से ग्रस्त प्राणियों का संतों ने मार्गदर्शन ही नहीं किया अपितु उनको विसंगतियों और विषमताओं से निकाल कर सत्य पथ का अनुगामी भी बनाया। इसी कड़ी में संत नितानंद का नाम भी आदर और सम्मान से लिया जाता रहा है। इनकी पावन वाणी का असर केवल हरियाणा ही नहीं अपितु पूरे देश में यत्र–तत्र सर्वत्र देखा जा सकता है।

आज प्रतिस्पर्धा का दौर है। ऐसे परिवेश में उन्नति के चरम–शिखरों को स्पर्श करने की प्रतिस्पर्धा सर्वत्र देखने को मिलती है। इसी लालसा के वशीभूत होकर प्राणी विकारग्रस्त हो जाता है। ऐसी विषम परिस्थितियों में सतगुरू ही उनका मार्गदर्शन करता है। साथ ही दोषों का निवारण भी करता है–

''कंकर से कंचन करे, करे पोत से लाल।
पत्थर से पारस करे, सतगुरू परम दयाल।।''[1]

समाज में बाह्याड़म्बरों और व्याभिचारों का बोलबाला दिन–प्रतिदिन बढ़ रहा है। इन सब बुराइयों को गुरू ही दूर कर सकता है। वह गुरू ही है जो लोगों की कुमति को सुमति में परिवर्तित करने में सहायक है–

''प्रेम बाण मारा गुरू, पहले तक दिया ताय।
नितानंद कंचन किया, कुमत कलंक छुटाय।।''[2]

सद्गुरू ही सच्चा साधक एवं उपासक है। वह तत्त्व ज्ञानी भी है तथा मोह–माया के प्रभाव से परे भी। पंचविकार उस पर कोई प्रभाव नहीं डालते। अतः सदगुरू ही सामाजिक प्राणी को मोह–माया और विषय–विकारों से छुटकारा दिलाता है–

''दिल दर्पण काई लगी, करम भरम रहा छाय।
गुरू पूरे मंजन किया, शब्द मसकला लाय।।''[3]

सांसारिक प्राणी को माया ही पंचविकारों में फंसाती है। संतजन उसे महाठगिनी कहते हैं जो अपने मोहपाश में सभी को सहज रूप से फंसा लेती है। नितानंद जी कहते हैं–

''नटनी आई भेष धर, लिया सकल जग लूट।
धनवन्त से निर्धन किये, सक्या न कोई छूट।।''[4]

संत नितानंद जी लोगों को माया से सावधान रहने का संदेश देते हैं। माया सांसारिक विकारों का मूल है–

''माया से काया भई, काया से सब भोग।
भोगों से सभ को लग्या, जनम मरण का रोग।।''[5]

संत नितानन्द ने माया और नारी को पर्याय माना है। ये दोनों भगवद्भक्ति में बाधक हैं। इन्होंने माया को चंचल चुडैल और चौरटी तक कहा है,जो व्यक्ति के चित्त को सहज रूप से ही चुरा लेती है–

''नितानन्द इस जगत् में, माया लगी चुडैल।
नर नारी सभ मार कर, फिर लगाए गैल।।
माया चंचल चोरटी, लूटै चित चुराय।
जन्म कर्म सभ खोय कर, नर रीता उठ जाए।।''[6]

माया से छुटकारा दिलाने का सदगुरू ही एकमात्र उपाय है क्योंकि माया सांसारिक प्राणियों को अपने अधीन कर लेती है परन्तु संतजन ही माया को अपने वशीभूत कर लेते हैं। संत नितानन्द जी कहते हैं–

''साकट के सिर पर रहे, साधन के पांई।
साकट सेती भांडणी, संतन सुखदाई।।''[7]

माया व्यक्ति को अज्ञानतावश अपने प्रभाव में ले लेती है। संत नितानंद जी कहते हैं मैंने इस संसार की भली–भांति जाँच–परख कर ली है। यहाँ सब दिखावा है,ढोंग है, छल–प्रपंच हैं। केवल परम तत्त्व परमात्मा ही सत्य है, उसका नित्यप्रति स्मरण करना चाहिए–

नितानन्द इस जगत् को, देखा झाड़ पिछोड़।
हरि बिन अपना को नहीं, बिखरी सुरत बिहोड़।।''[8]

नितानंद ने बाह्याड़म्बरों और पाखण्डों का पर्याप्त मात्रा में विरोध किया और कहा कि ये सब समाज के लिए घातक हैं। इन्होंने

माला–तिलक और अन्यान्य वेशभूषा धारण करने का विरोध किया–

''भेष दिखावत क्या फिरै, माला–तिलक बणाय।
नितानंद हर क्यों मिलैं, झूठी आस लगाय।।''[9]

नितानंद जी ने माला जपने और धारण करने का विरोध किया है। वे कहते हैं कि व्यक्ति का मन तो चंचल है, चलायमान है, मन में पाप समाहित हैं तो स्थिति में माला जपने से न तो इहलोक में और न ही परलोक में सुख की प्राप्ति हो सकती है–

'' नितानन्द माला पहर, कछु न सुधरै काम।
मन माला भज प्रेम से, मिला जो चाहे राम।।''[10]

''माला तिलक बनाय कर, बहुत करें पाखण्ड।
जब लग भीतर झूठ है, मिटै न जम का दण्ड़।''[11]

संत नितानंद जी ने तीर्थाटन और व्रतादि का पुरजोर विरोध किया है क्योंकि ये सब करने मात्र से परम तत्त्व परमात्मा की प्राप्ति नहीं होती। ये सब पाखण्ड़ हैं, आडम्बर हैं, सांसारिक प्रपंच है। नितानंद जी की वाणी में सद्कर्म करने का संदेश तो दिया ही गया है,साथ ही ढोंगी लोगों से सावधान रहने के लिए भी कहा गया है क्योंकि ये कुपथगामी लोग हैं–

''तीर्थ न्हाता क्या फिरै, ऊपर भेष बनाय।
नितानंद हर भक्ति बिन, मन का मैल न जाय।।
भेष धरे हर ना मिलै, जब लग भक्ति न होय।
स्वांगी बहु संसार है, साधु बिरला कोय।।''[12]

सांसारिक लोग पंचविकारों और पाखण्डों से ग्रस्त हैं। नितानंद जी इन सब से दूर रहने का संदेश देते हैं। क्योंकि ऐसे लोग नरक के अधिकारी होते हैं–

''स्वांग बनाय अतीत का, दुनिया ठग ठग–खाय।
राम भक्ति से हित नहीं, बंध्या नरक को जाय।।''[13]

फिर वे कहते हैं कि ऐसे स्वार्थलोलुप व्यक्ति सत्य प्राप्ति से वंचित रह जाते हैं–

''जग में भग में द्रव्य में, सभै देख ललचाहिं।
नितानन्द हर जन वही, रहैं चरण की छाहिं।।'[14]

नितानंद जी ने अपनी वाणी के माध्यम हिन्दू और मुस्लिम ही नहीं अपितु सभी धर्मों–सम्प्रदायों में प्रचलित रूढि–परम्पराओं पर करारा प्रहार किया है–

''चढ़ मसजिद पर बांग दे, कहै एक अल्लाह।
जीव हतै जब दूसरा, भूल गया दरगाह।।''[15]

इसी प्रकार वे मांसाहार करने वालों की भी घोर निन्दा करते हैं। उन्हें लताडते हुए कहते हैं–

''मियां स्वाद कै बस पड़या, बहुत बिनासे जीव।
चढ़ मसजिद साहेब कहैं, कहां उन्हों को पीव।।''[16]

फिर वे माँस–भक्षण करने और मदिरापान करने वाले हिन्दुओं को भी उसी तरह फटकारते हैं–

''मांस भखै मदिरा पिवै, शिव शक्ति का दास।
नितानन्द उन जिवहुं को, सदा जमों की त्रास।।''[17]

इस प्रकार इन्होंने हिन्दू–मुस्लिम आदि सम्प्रदायों में प्रचलित बुराइयों को उद्घाटित करके उन्हें दूर करने का प्रयास किया है। साथ ही सत्संगति करने की सलाह भी दी है क्योंकि साध–संगत से सभी मनोविकार दूर हो जाते हैं तथा परम तत्त्व परमात्मा से साक्षात्कार का अवरूद्ध मार्ग भी खुल जाता है–

''राम कृपा से पाइये, साधन का सतसंग।
नितानंद सुख ऊपजै, करै सकल भय भंग।।''[18]

केवल यही नहीं इन्होंने समाज में फैली कुरीतियों का भण्डाफोड किया है। वे समाज में व्याप्त वेश्यावृति का पुरजोर विरोध करते हैं तथा नारी को पतिव्रत धर्म का पालन करने की सलाह देते हैं–

''जाके चित में पति बसै, सोई सुलसनी नार।
जब लग चित, जित, तित फिरे, करे कोटि व्याभिचार।।''[19]

इस प्रकार नितानंद जी ने पति–पत्नी दोनों को अपने–अपने धर्म का निर्वहन करने का संदेश दिया है ताकि स्वस्थ समाज की स्थापना हो सके। साथ ही संत नितानंद जी मन एवं इन्द्रियों पर संयम रखने का परामर्श देते हैं तथा मानसिक स्थिरता और धैर्य धारण करने का मशवरा भी देते हैं–

''नितानंद डगमग तजो, धरो धीर धुन लाय।
तिनका कोई क्या करै, जिनके राम सहाय।।''[20]

साथ ही वे सद्गुणों को स्वीकार करने और अवगुणों को छोड़ने के लिए प्रेरित करते हैं क्योंकि गुणग्राही व्यक्ति जीवन में उन्नति प्राप्त करता है तथा अन्यतर प्राणी सतत् रूप से अवनति की ओर अग्रसर होता रहता है–

''नितानंद गुण लीजिये, सभ घट रमता राम।
जो कोई अवगुण करै, ताही की हो हान।।''[21]

भारतीय समाज और संस्कृति में निंदा को निषेध माना है। नितानंद जी कहते हैं–

''निन्दक सा कोई नहीं, बुरा जगत के मांहि।
और बचे तो बच रहें, निन्दक दोजख जाए जाहिं।।''[22]

नितानन्द जी की वाणी में ब्रह्म के निर्गुण–निराकार स्वरूप को महत्त्व दिया है। वे ब्रह्म ज्योतिर्मय एवं प्राणादाता हैं, वे परम ज्ञान–विज्ञान के विधाता हैं तथा कमल नाभि में निवास करने वाले हैं। वे सभी जीवों के जीव तथा घट–घट व्यापी हैं–

''ज्योति रूप भगवान, पुरूष प्रानन को दाता।
पूरण परम निधान, ज्ञान विज्ञान विधाता।
कमल नाभ के मध्य, आदि नारायण स्वामी।
सब जीवन के जीव, सकल घट अन्तर्यामी।।''[23]

निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि नितानंद जी की वाणी में समाज में व्याप्त विसंगतियों और विषमताओं को दूर करने का संदेश दिया गया है। साथ ही सामाजिक मान–मूल्यों और सांस्कृतिक आयामों का संरक्षण करके समाज को उन्नति के चरम शिखर की ओर ले जाने का सार्थक प्रयास किया। केवल यही नहीं मनुष्य को पंचविकारों का त्याग करने का संदेश देकर सद्कर्म करने एवं सद्मार्ग पर चलने की अनुशंसा की। जातीय एवं साम्प्रदायिक भेदभाव को मिटाकर पारस्परिक प्रेम एवं सौहार्दपूर्वक रहने का संदेश दिया ताकि समाज को उचित दिशा दी जा सके। केवल यहीं नहीं बाह्याड़म्बरों और रूढ़ि–परम्पराओं का त्याग करके मिथ्या मार्ग को त्यागने के लिए कहा है और सदगुरू के निर्देशन साधनरत होकर उस परम तत्त्व परमात्मा को प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त किया। इस प्रकार नितानंद की वाणी अपने कलेवर में अनेक आयामों को समाहित किए हुए है।

संदर्भ

1. स्वामी नितानन्द, सत्य सिद्धांत प्रकाश, पृ. 8
2. वही. वही. पृ. 6
3. वही. वही. पृ. 7
4. वही. वही. पृ. 165
5. वही. वही. पृ. 167
6. वही. वही. पृ. 174
7. वही. वही. पृ. 182
8. वही. वही. पृ. 112
9. वही. वही. पृ. 224
10. वही. वही. वही,
11. वही. वही. पृ. 225
12. वही. वही. पृ. 224
13. वही. वही. पृ. 225
14. वही. वही. पृ. 226
15. वही. वही. पृ. 345
16. वही. वही. पृ. 346
17. वही. वही. पृ. 348
18. वही. वही. पृ. 231
19. वही. वही. पृ. 101
20. वही. वही. पृ. 273
21. वही. वही. पृ. 261
22. वही. वही. पृ. 358
23. वही. वही. पृ. 381